विश्व के अन्य धर्म एवं पर्यावरण संरक्षण

भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता इस तथ्य का पुष्ट प्रमाण है कि भारत में सर्व धर्म का समभाव को सदैव आदर की दृष्टि से देखा गया है तथा समस्त धर्मों का एकमात्र शाश्वत सत्य है– 'जीओ और जीने दो।' जीओ और जीने दो का सम्बन्ध न केवल मानव समुदाय तक ही सीमित है किनतु इसका चर–अचर जीव, जड़, प्रकृति व पर्यावरण से भी गहरा सम्बन्ध है।

विश्व के प्रमुख धर्मों में हिन्दू धर्म के अतिरिक्त, ईसाई, धर्म, इस्लाम धर्म, जैन एवं बौद्ध धर्म आते हैं। इन सभी धर्मों में निरर्थक जीव–हिंसा का निषेध है। इतना ही क्यों, प्रकृति के विभिन्न उपादानों एवं आयामों को इन धर्मावलम्बियों ने पुष्पित, पल्लवित, विकसित एवं प्रफुल्लित देखने का प्रयास किया है।

इस्लाम धर्म में भी प्रकृति को सजाने, संवारने के कृत्य को प्रत्येक मुस्लिम का पुनीत कर्तव्य माना है। ईसाई धर्म में तो प्रकृति को देवी स्वरूप समझा है। प्रकृति की गोद में बैठकर ही कीट व शैले विश्व के महान् कवि बने। बौद्धित्व प्राप्त हुआ। जैन धर्म के समस्त साधु–साध्वियों के लिए प्राकृतिक पर्यावरण में ही विहार करना परमावश्यक है क्योंकि जैन धर्म में किसी भी प्रकार की जीव–हिंसा का निषेध है तथा प्राकृतिक पर्यावरण में विहार करने से ही उस परम अलौकिक शक्ति का आभास हो सकता है। इस प्रकार हम देख सकते हैं कि हिन्दू, बौद्ध एवं ईसाई, जैन, इस्लाम तथा विश्व के सभी धर्मों में पर्यावरण संरक्षण का प्रावधान किया गया है।

कहने का तात्पर्य यह है कि सभी धर्मों में सदा ही मानव मात्र के कल्याण की परिकल्पना निहित है, 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना को स्वीकारा है तथा 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया' की कल्पना से संजोया है। उन्होंने जड़, जीव, चर, अचर के अस्तित्व के लिये प्रकृति के सभी उपादानों के संरक्षण. का भी आह्वान किया है।

इस्लाम धर्म एवं पर्यावरण संरक्षण

इस्लाम धर्म क्षमा और दया के भाव का प्रतिपादन करने वाला विश्व का सबसे अनूठा धर्म है। सूरतुल्यातिहा आयत 1 व 2 में उल्लेख है कि 'सब स्तुति परमात्मा के वास्ते है। जो पूरे संसार का परवरदिगार अर्थात् पालन करने वाला है, क्षमा करने वाला है, दयालु है।'

इस्लाम धर्म की आयतों में जीव–हत्या का निषेध तथा पेड़–पौधों की रक्षा करने की हिदायत दी है। एक स्थान पर हजरत अबुबक्र ने भी कहा था, 'फल देने वाले वृक्षों को, फसलों व जानवरों को तबाह मत करो।' कुरान में अनेक स्थानों पर ऐसे संकेत मिलते हैं कि ईश्वर व जीव के बीच प्रेम का अटूट सम्बन्ध है। सारी सृष्टि किसी अदृश्य सत्ता से व्याप्त है। कुरान यह भी मानता है कि खुदा अर्स (आकाश) पर रहता है जहाँ उनका शासन है, खुदा प्रेम व दया का सागर है। जब इस्लामिक देश आकाश में राकेट छोड़ते हैं व उससे जो विस्फोट होता है तो खुदा को चोट पहुंचती है। साथ–ही–साथ पृथ्वी पर गिरने से उसके मलबे से बंदों को भी पर्यावरणी प्रदूषण को भोगना पड़ता है। इस्लाम धर्म स्वर्ग के सातवें अर्स पर होने में विश्वास करता है। वहाँ भी प्रकृति की आलौकिकता का वर्णन है वहाँ एक सुन्दर पुष्पोद्यान है जिसके पास झरने व फव्वारे हैं, स्वर्ग में दूध व मधु की नदियाँ बहती हैं, वहाँ ऐसे वृक्ष हैं जिनकी जड़ें सोने की हैं, जिनमें बड़े ही स्वादिष्ट फल लगते हैं। स्पष्टतः प्रकट होता है कि कुरान में प्रकृति–प्रेम को दर्शाया गया है। मोहम्मद इस्लाम धर्म के अनुयायी भारतीय बादशाहों ने भी अपने घरों में तुलसी के पौधों का आदर भाव से रखा। इस्लाम धम भी प्रकृति का रक्षक है न कि भक्षक। अकबर बादशाह तो होम, यज्ञ, वेद, सूर्य प्रणाम, तलुसी, पीपल–पूजा में विश्वास करता था। उन्होंने जैन बौद्ध एवं हिन्दू धर्म से प्रभावित होकर गौहत्या पर रोक लगा दी थी। इसी प्रकार शाहजहाँ ने भी मोर पक्षियों का शिकार करने वाले मुस्लिम अफसरों के हाथ काट दिये थे। आज भी बिहार के मुसलमान सूर्य–पूजा करते हैं। हिन्दुस्तान के वाशिन्दे अन्य मुसलमान कवि प्रकृति की रमणीयता की छटा अपने काव्य के माध्यम से प्रकट करते रहे हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि हिन्दू धर्म ही नहीं, इस्लाम धर्म भी प्रकृति के शोषण एवं पर्यावरण के प्रदूषण का हामी नही है। इस्लाम धर्म में प्रकृति को संजोने व संवारने को मानव का पुनीत कर्त्तव्य मानते हुए पर्यावरण संरक्षण के महत्त्व को दर्शाया गया है।

अतः मोहम्मद साहब स्वयं खजूर के वृक्ष के पास बैठकर शिक्षा दिया करते थे, उनका कहना था कि 'खुदा स्वयं सौन्दर्य का प्रतीक है और बन्दा उसका पुजारी है।'

ईसाई धर्म एवं पर्यावरण-संरक्षण

ईसाई धर्म सदा अहिंसा का पक्षधर रहा है। ईसा मसीह स्वयं जीवों पर दया, अहिंसा, करुणा व मैत्री में विश्वास करते थे। वे पाप से घृणा व पापी से प्यार करने में विश्वास करते थे। वे भौतिकवादी व्यवस्था के विपरीत थे। उनका विचार था कि भौतिकवादी व्यवस्था ही जीवन में असंतुलन पैदा करती है व मानव स्वार्थी और विचारों से प्रदूषित हो जाता है। वे प्राकृतिक एवं वैचारिक प्रदूषण के विरोधी रहे हैं। स्वयं को सूली पर चढाने वालों के प्रति भी उनके मन में दया थी तभी तो उन्होंने कहा, 'हे ईश्वर इन्हें माफ कर देना, इन्हें ज्ञात नहीं कि ये क्या कर रहे हैं।' ईसा मसीह का संदेश जीओ और जीने दो "Live and Let others live" उनकी मान्यता थी कि 'प्रेम ही ईश्वर है, ईश्वर ही प्रेम है। जो प्रेम में रहता है वह ईश्वर में रहता है तथा ईश्वर उसमें रहता है।' "Love is God, God is love, one who lives in love, God lives in him." ये विचार मानवीय प्रेम के उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

महात्मा ईसा से एक धनी व्यक्ति ने पूछा, 'भले गुरु ! अनन्त जीवन पाने के लिए मुझे क्या करना चाहिए ?' ईसा ने उत्तर दिया 'तुम मुझे भला क्यों कहते हो ? ईश्वर को छोड़कर कोई भला नहीं। क्या तुम नियमों को नहीं जानते ? किसी की हत्या मत करो, व्यभिचार मत करो, चोरी मत करो, झूठी गवाही मत दो, छल–कपट मत करो और अपने माता–पिता का आदर करो।' धनी व्यक्ति ने ईसा से कहा, 'गुरुवर इस सब का पालन तो मैं अपने बचपन से ही करता रहा हूं।' ईसा फिर बोले– 'तुममें एक बात की कमी है। यदि तुम सिद्ध होना चाहते हो तो अपनी सारी सम्पत्ति बेचकर गरीबों में बांट दो और स्वर्ग में तुम्हारे लिए पूंजी रखी होगी। तब आओ और मेरा अनुसरण करो।'

ईसा के वचनों का अनुसरण करने का मतलब हिंसा का प्रतिकार तो है ही, झूठ, कपट, व्यभिचार और चोरी का परित्याग भी है। दया इस खजाने की अखण्ड पूंजी है। जिस व्यक्ति में दया होगी और जो गरीबों का हितचिंतन करेगा वह पाप तो कर ही नहीं सकता, हिंसा का भाव तो उसमें आ नहीं सकता। मानवमात्र से प्रेम करना, जीवों पर दया करना, प्रकृति को पूजनीय मानना व हिंसा से दूर रहना ईसाई धर्म के प्रमुख सिद्धांत हैं, जो पर्यावरण संरक्षण के महत्त्व को दर्शाते हैं।

जैन धर्म एवं पर्यावरण संरक्षण

विभिन्न धर्मों में पर्यावरण संरक्षण के प्रावधानों को हम यदि अति विस्तार से देखें तो पायेंगे कि जैन धर्म पूर्ण रूप से अहिंसा पर आधारित है।

पंचव्रतों का पालन करने वाला प्रत्येक जैनी, जो अहिंसा में विश्वास करता है, कदापि पेड़–पौधों को नष्ट करने की कल्पना भी नहीं कर सकता। जैन साधु प्रायः कुटियों में निवास करते हैं व वनों में तपश्चर्या करते हैं। अतः स्वभावतः ही वे वनों के प्रति संवेदनशील होते हैं। भगवान पार्श्वनाथ, महावीर स्वामी, ऋषभदेव, अरिष्टनेमि आदि सभी ने भोग को तयाग कर जीव दया एवं अहिंसा का पाठ सिखाया था। ये प्रकृति को प्रधानता देते थे। उनके विचार में यह समस्त सृष्टि प्रकृति के नियमों से संचालित होती है। जैन धर्म का अनेकान्तवाद अहिंसा की साधना है, जिससे जीव, मनुष्य, पेड़–पौधे एवं प्रकृति का संरक्षण होता है तथा पर्यावरण में शुद्धिकरण रहता है।

जैन धर्म ने विश्व में जिस अहिंसा की पताका को फहराया, आज उसकी कीर्ति सारे संसार में व्याप्त है। प्रश्न व्याकरण 3/2 के अनुसार, 'प्राण वध (हिंसा) चण्ड है रुद्र है, क्षुद्र है, अनार्य है, करुणारहित है, क्रूर है और महाभयंकर है।'

अन्य जैन ग्रन्थों में भी लगभग यही भावना प्रतिपादित की गई है जैसे 'एक ही जीव पर दया करोड़ कल्याण करने वाली है। दुःख दरित (पाप) एवं (शत्रु वर्ग) को नष्ट करने वाली है तथा संसार सागर से पार करने वाली नौका है। किसी भी प्राणी को मत मारो, यह धर्म का नित्य शाश्वत नियम है। सब प्राणियों का कुशल क्षेम करने वाला है।' (आव. आ. 4)

जिनका उल्लेख भगवान महावीर ने किया है, वे पांच अणुव्रत निम्न हैं–

अहिंसा– अहिंसा महावीर स्वामी की शिक्षा और जैन धर्म के सिद्धान्तों का मूलमंत्र है। अहिंसा का अर्थ प्राणिमात्र के प्रति दया, समानता और उपकार की भावना से है। मन, वचन और कर्म से किसी के प्रति अहित की भावना न रखना ही वास्तविक अहिंसा है। समस्त जीवों के प्रति संयमपूर्ण जीवन–व्यवहार ही अहिंसा है। परन्तु सांसारिक मनुष्य के लिए पूर्ण अहिंसाव्रत धारण करना कठिन है। इसलिए गृहस्थों के लिए 'स्थूल अहिंसा' का विधान किया गया है। 'स्थूल अहिंसा' का अर्थ है– निरपराधियों की हिंसा न करना।

सत्य– अहिंसा के साथ–साथ महावीर स्वामी ने सत्य वचन पर भी बहुत जोर दिया, क्योंकि बिना सत्यभाषण के अहिंसा का पालन सम्भव नहीं है। अतः महावीर स्वामी का उपदेश था कि प्रत्येक मनुष्य को प्रत्येक परिस्थिति में सत्य बोलना चाहिए। प्रत्येक मनुष्य को झूठ से बचना चाहिए और सच्चाई के साथ रहना चाहिए।

अस्तेय– अस्तेय का अर्थ है– चोरी न करना। महावीर स्वामी ने चोरी को महान् अनैतिक कार्य बताया तथा इस दुर्गुण से हमेशा दूर रहने की शिक्षा दी। इसका व्यापक अर्थ है, दूसरों की चीज अथवा हक न लेना।

अपरिग्रह– अपरिग्रह का अर्थ है– संग्रह न करना। महावीर के अनुसार जो व्यक्ति सांसारिक वस्तुओं का संग्रह नहीं करता, वह संसार के मायाजाल से दूर रहता है। इसका व्यापक अर्थ है– वस्तुओं और पदार्थों का संग्रह न करना, सम्पत्ति न जुटाना और जो कुछ भी अपने पास हो उसे दूसरों के आराम के लिए प्रस्तुत कना।

ब्रह्मचर्य– उपर्युक्त चारों बातों का पालन तब तक नहीं हो सकता, जब तक कि मनुष्य विषय–वासनाओं से दूर नहीं रहता। इसलिए महावीर ने पार्श्वनाथ के इन चार व्रतों में ब्रह्मचर्य का पांचवां व्रत जोड़कर इन्हें त्रिरत्नों की प्राप्ति के साधन बताये। ब्रह्मचर्य का एक अर्थ शरीर की अपवित्रताओं को दूर करना भी है।

भगवान महावीर ने आत्मतुल्य के सिद्धांत का प्रतिपादन किया। उन्होंने कहा–वन्य जीवों को अपने समान समझो। वनस्पति के संदर्भ में भी उनका यही प्रतिपादन था– तुम देखो, वनस्पति दूसरे जीवों की अपेक्षा तुम्हारे अधिक निकट है। पृथ्वी, अप्, तेजस, वायु आदि के जीवों का समझना कुठ कठिन है किन्तु वनस्पति को समझना आसान है क्योंकि यह तुम्हारे अत्यन्त निकट है।

जिससे तुम्हें जीवन मिल रहा है, उसे भी तुम भय दे रहे हो। तुम उसे सताना छोड़ दो। यह सत्य है, तुम्हारी आवश्यकताएं उस पर निर्भर हैं। तुम खाए बिना नहीं रह सकते। किन्तु तुम कम से कम अनावश्यक मत सताओ, मन में यह भावना रखो– यह हमारा उपकार करने वाला जगत है। उसके प्रति तुम्हारा जो क्रूर एवं पाशविक व्यवहार होता है, उसके लिए क्षमायाचना करो। तुम्हें आवश्यकतावश किसी पेड़ को काटना पड़ा है, किसी वनस्पति को खाना पड़ा है, तो तुम उसके प्रति मन में क्षमा याचना करो। तुम्हारे मन में यह भाव उत्पन्न होना चाहिए कि– 'विवशता के कारण मैं वनस्पति जगत् का उपयोग कर रहा हूँ। मेरी विवशता के लिए मुझे क्षमा करें।' यह भाव कृतज्ञता का भाव है।

महावीर ने जो कहा, उसका सार है– वनस्पति जगत के प्रति करुणा, सहृदयता, कृतज्ञता और क्षमायाचना का भाव होना चाहिए।

आज भी इस धर्म को मानने वाले प्रत्येक जैन, जो आचार, विचार, रहन–सहन, रीति–रिवाज में अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य व अपरिग्रह में विश्वास करते हैं, उन्हें अपने तीर्थंकरों के उपदेशानुसार विभिन्न संघों के माध्यम से प्रकृति की रक्षा करने का निरन्तर प्रयास करते रहना चाहिए जिससे प्रदूषण को दूर कर पर्यावरण संरक्षण किया जा सके तथा 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया' की कल्पना साकार हो सके।

प्रत्येक जैन सायंकाल सूर्यास्त से पहिले भोजन करता है, मुंह पर पट्टी

बांधता है ओर नंगे पांव भ्रमण करता है। ये तीनों गुण उसके अहिंसात्मक लक्षण को दर्शाते हैं कि वह सूक्ष्मजीव का विनाश भी नहीं चाहता फिर बड़े जानवर व मनुष्य तो बहुत उच्च श्रेणी में आते हैं। अतः उसकी यह भावना 'पर्यावरण संरक्षण' के प्रति चेतना को दर्शाती है।

बौद्ध धर्म एवं पर्यावरण संरक्षण

महात्मा बुद्ध ने बौद्ध धर्म की स्थापना की और जीवन दर्शन को बहुत अच्छे ढंग से समझाया है। उन्हें बतलाया कि सांसारिक वस्तुओं को भोगने की तृष्णा या इच्छा ही सारे दुःखों का मूल कारण है। यह तृष्णा ही आत्मा को जन्म–मरण के बन्धन में जकड़े रखती है। अतः निर्वाण अथवा मोक्ष प्राप्ति के लिए तृष्णा को मिटा देना आवश्यक है। इसके लिए मनुष्य को अष्टांगिक मार्ग का अनुसरण करना चाहिए। यह मार्ग जीवनयापन के बीच का रास्ता है। इसलिए इसको 'मध्यम मार्ग' भी कहा गया है। अष्टांगिक मार्ग के 8 अंग इस प्रकार हैं–

1. **सम्यक् दृष्टि**– सत्य–असत्य, पाप–पुण्य, सदाचार और दुराचार में भेद करना ही सही ज्ञान है। इसी से चार सत्यों का सही–सही ज्ञान होता है। यह ज्ञान श्रद्धा और भावना से युक्त होना चाहिए।

2. **सम्यक् संकल्प**– कामना और हिंसा से मुक्त आत्म कल्याण का पक्का निश्चय ही सम्यक् संकल्प है।

3. **सम्यक् वाणी**– सत्य, विनम्र और मृदु वचन तथा वाणी पर संयम ही सम्यक् वाणी है।

4. **सम्यक् कर्मान्त**– सब कार्यों में पवित्रता रखना। हिंसा, द्रोह तथा दुराचरण से बचते रहना और सत्कर्म करना।

5. **सम्यक् आजीविका**– न्यायपूर्ण मार्ग से आजीविका चलाना। जीवन–निर्वाह में निषिद्ध मार्गों का त्याग करना।

6. **सम्यक् प्रयत्न**– इसे सम्यक्–व्यायाम भी कहते हैं। इसका अर्थ है सत्कर्मों के लिए निरन्तर उद्योग करते रहना।

7. **सम्यक् स्मृति**– लोभ आदि चित्त के सन्तापों से बचना तथा उत्तम शिक्षाओं को सदैव याद रखना।

8. **सम्यक् समाधि**– राग तथा द्वेष से रहित होकर चित्त की एकाग्रता को बनाये रखना।

गौतम बुद्ध ने वृक्ष की महत्ता को इस प्रकार वर्णित किया है– 'वृक्ष,

संवेदनशीलता व असीमित उदारता की जीती–जागती प्रतिमूर्ति हैं जो स्वयं के जीवन के लिये आपसे कुछ नहीं मांगते वरन् अपने जीवन के सभी तत्व आपको उदारता के साथ अर्पित करते रहते हैं। वे सभी जीवों को सुरक्षा प्रदान करते हैं तथा कुल्हाड़ी के लिये उस व्यक्ति को भी छाया देते हैं जो उन्हें निर्ममता से काटते हैं।'

बौद्ध जातक में, पेड़ों पर एक लघुकथा है। एक अरण्य में बोधिसत्त्व वृक्ष देवता होकर पैदा हुआ। उससे थोड़ी दूर पर दूसरे वृक्ष देवता थे। उस वनखण्ड में सिंह और व्याघ्र रहते थे। उनके भय से सभी वृक्ष सुरक्षित थे, न कोई जंगल में आता, न पेड़ काटत। एक दिन एक मूर्ख ने समझदार पेड़ से कहा– इन सिंहों के कारण हमारा वन मांस की दुर्गन्ध से भर गया है। कहो तो मैं इन्हें डरा कर भगा दूं ? बोधिसत्त्व ने कहा– मित्र इनके कारण ही तो हम सुरक्षित हैं और बदले में हमारे कारण ये वन्य–जीव भी सुरक्षित हैं। इनको भगा दोगे तो हमारा विनाश हो जाएगा। उस मूर्ख पेड़ ने कुछ नहीं सुना और सिंहों एवं अन्य वन्य पशुओं को डरा कर भगा दिया। फिर क्या था ? लोग कुल्हाड़ी लेकर आ गये और लगे पेड़ों को काटने। तब मूर्ख पेड़ ने कहा आपका कहना न मानने का ही यह फल है। अब हम पशुओं को वापिस बुला लेते हैं। तभी, हम सुरक्षित रह पायेंगे।

बौद्ध काल की यह विशेषता भी रही है कि नगर नियोजित ढंग से बनाये जाते थे। उक्त काल के चित्रों के माध्यम से बौद्ध धर्म को अवलोकन किया जा सकता है। गौतम बुद्ध की जीवन घटनाएँ, मातृ–पोषक–जातक, विश्वांतर–जातक, षड़दंत जातक, रुह–जातक और महाहंस–जातक आदि 12 जातकों में वर्णित गौतम बुद्ध की पूर्वजन्म की कथाएं, धार्मिक इतिहास तथा बुद्ध के दृश्य और राजकीय तथा लौकिक चित्र अंकित हैं। ऐसे भी चित्र हैं जिनमें बाग–बगीचे, वन, रथ, घोड़े, हाथी, हिरण आदि पशुओं व पक्षियों में हंस आदि के चित्र अंकित हैं। कमल के पुष्प को भी भिन्न–भिन्न प्रकार के चित्रित किया गया है। बौद्ध काल के अवशेष स्तम्भ, स्तूप, चैत्य और विहार के रूप में दृष्टिगोचर होते हैं। उक्त काल में बौद्ध भिक्षु खुले वातावरण एवं वनों में ही निवास करते थे, कालान्तर में जंगलों को काटकर साफ करने की स्थिति में उन्होंने अपने निवास हेतु चैत्यों का चयन किया। अतः इस प्रकार बौद्ध धर्म भी 'पर्यावरणसंरक्षण' का पक्षधर रहा है एवं इसी के क्षेत्र में निरन्तर योगदान दे रहा है।

❑❑